समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 फरवरी 2025

वर्ष : 37, अंक : 15
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जनवरी 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/16/2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ

महत्व साधन नहीं, संकल्प का है

''अगर मुझे अमुक सुविधाएँ मिलतीं, तो मैं ऐसा करता।'' इस प्रकार की बातें करने वाले एक झूठी आत्म प्रवंचना किया करते हैं। वे अपनी नालायकी को भाग्य के ऊपर, ईश्वर के ऊपर थोप कर खुद निर्दोष बनना चाहते हैं। जैसी परिस्थिति की कल्पना की जा रही है, यदि वैसी मिल भी जाये तो वे भी अपूर्ण मालूम पड़ेंगी। जिन लोगों के पास धन, विद्या, मित्र, पद आदि पर्याप्त मात्रा में मिले हुए हैं, हम देखते हैं कि उनमें से भी अनेकों का जीवन बहुत अस्त-व्यस्त और असन्तोषजनक स्थिति में पड़ा हुआ है। अनेक मामलों में धन आदि का होना उनके आनन्द की वृद्धि न कर सका, वरन जी का जंजाल बन गया।

यदि आपके पास आज मनचाही वस्तुएँ नहीं हैं, तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। टूटी-फूटी चीजें हैं, उन्हीं की सहायता से अपनी कला को प्रदर्शित करना आरम्भ कर दीजिए। जब चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ होता है तब वह दीपक, जिसमें आधे पैसे का तेल और दमड़ी की बत्ती है-कुल मिलाकर एक पैसे की भी पूँजी नहीं है-चमकता है और अपने प्रकाश से लोगों के रुके हुए कामों को चालू कर देता है। उस अंधकार में हजारों पैसे के मूल्य वाली वस्तुएँ चुपचाप पड़ी होती हैं, लेकिन यह एक पैसे की पूँजी वाला दीपक प्रकाशवान होता है, अपनी महत्ता प्रकट करता है, लोगों का प्यारा बनता है, प्रशंसित होता है और अपने अस्तित्व को धन्य बनाता है।

क्या दीपक ने कभी ऐसा रोना रोया कि मेरे पास इतने मन तेल होता, इतनी रुई होती, इतना बड़ा मेरा आकार होता तो ऐसा बड़ा प्रकाश करता? उसका कार्य छोटा है बेशक, पर उस छोटेपन में भी सफलता का उतना ही अंश है, जितना कि सूर्य और चन्द्र के चमकने की सफलता में होता है। यदि आन्तरिक सन्तोष, धर्म, और परोपकार की दृष्टि से तुलना की जाये तो अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार दोनों का ही कार्य एक-सा है। दोनों का ही महत्त्व समान है, दोनों की सफलता एक-सी है।

सच बात तो यह है कि अभावग्रस्तता एवं कठिनाइयों में पले हुए साधनहीन व्यक्ति ही संसार के नेता, महात्मा, महापुरुष बनने के पथ पर चले हैं। कारण यह है कि विपरीत परिस्थितियों से टकराने पर मनुष्य की अन्तः प्रतिभा जाग्रत् होती है, सुप्त शक्तियों का विकास होता है। पत्थर पर रगड़ खाने वाला चाकू तेज होता है। पुराने जमाने में राजा-रईस लोग अपने लड़कों को ऋषियों के आश्रम में इसलिए भेज देते थे कि वे वहाँ रहकर अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करें और अपनी प्रतिभा को तीव्र बनायें।

हम जीवन जीना सीखें

यदि 'जिन्दगी जीने की कला' आती हो तो अभाव, कठिनाई या विपरीत परिस्थिति भी कुछ बाधा नहीं डाल सकती। गरीबी या कठिनाई में साधनों की कमी का दोष है, तो प्रतिभा को चमकाने का गुण भी है। अमीरी में साधनों की बाहुल्यता है, तो लाड़-दुलार और ऐश-आराम के कारण प्रतिभा के कुन्द हो जाने का दोष भी है। दोनों ही गुण-दोषयुक्त हैं, किन्तु जो जीवन जीना जानता है वह चाहे अमीर हो या गरीब, अच्छी परिस्थितियों में हो या कठिनाइयों में पड़ा हो, कुछ भी क्यों न हो, हर एक स्थिति में अनुकूलता पैदा कर सकता है। वह हर अवस्था में उन्नति, सफलता और आनन्द प्राप्त कर सकता है।

आनन्दमय जीवन बिताने के लिए धन, विद्या, अच्छा स्वास्थ्य, सबका सहयोग आदि की आवश्यकता है, परन्तु ऐसा नहीं समझना चाहिए कि इन वस्तुओं के होने से ही जीवन आनन्दमय बन सकता है। एक कहावत है 'नाच न जाने, आँगन टेढ़ा।' जिसे नाचना नहीं आता, वह अपनी अयोग्यता को यह कहकर छिपाता है कि क्या करूँ? आँगन टेढ़ा है। टेढ़ा ही सही, जिसे नाचना आता है, उसके लिए टेढ़ेपन के कारण कुछ विशेष अड़चन पड़ने की कोई बात नहीं है। इसी प्रकार जो जीवन जीने की विद्या जानता है, उसे साधनों का अभाव और विपरीत परिस्थितियों की शिकायत करने की कोई बात नहीं है। साधनों की आवश्यकता है, बेशक? परन्तु इतनी नहीं कि उनके बिना प्रगति ही न हो सके।

चतुर पुरुष विपरीतता में अनुकूलता पैदा कर लेते हैं, विष को अमृत बना लेते हैं। संखिया, कुचला, धतूरा, पारा, सींगिया, हरताल आदि प्राणघातक विषों से लोग रोगनाशक, आयुवर्धक रसायन बनाते हैं। ऐसे लोग बालू में से चाँदी, कोयले में से हीरा निकालते हैं। सर्पों की विष-थैली में से मणि प्राप्त करते हैं, धरती की शुष्क और कठोर तह को खोदकर शीतल जल निकालते हैं, गरजते समुद्र के पेट में घुसकर मोती लाते हैं। दृष्टि पसार कर देखिये, आप को चारों ओर ऐसे कलाकार बिखरे हुए दिखाई पड़ेंगे, जो तुच्छ चीजों की सहायता से बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। ऐसे वीर पुरुषों की कमी नहीं है, जो निष्ठुर परिस्थितियों में प्रवेश करके विजय लक्ष्मी का वरण करते हैं। यदि आप की इच्छाशक्ति जरा वजनदार हो, तो आप भी इन्हीं कलाकारों और वीरपुरुषों की श्रेणी में सम्मिलित होकर अपनी आज की सारी विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बना सकते हैं। अपनी सारी शिकायतों, चिन्ताओं को आसानी के साथ सन्तोष, आशा और समर्थता में बदल सकते हैं।

जहाँ चाह, वहाँ राह

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल आती है। सब लोग अपने कर्मों का फल पाते हैं। शास्त्र में एक महावाक्य है कि ''भला या बुरा, जैसा भी कुछ तू है, तूने ही वैसा अपने आप को बनाया है।'' मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति द्वारा अपने आप को बनाता है। जिसकी आकांक्षा उन्नति के पथ पर चलने की, गौरवान्वित होने की, सौभाग्यशाली बनने की और सिद्धि-समृद्धि प्राप्त करने की है, उसे कोई भी उसके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।

यों तो बहुत से आदमी तरह-तरह के मन के लड्डू बनाते हैं, सुखी, समृद्ध होने के बड़े-बड़े मनसूबे बाँधते हैं, परन्तु उनमें से सफल बहुत ही थोड़े मनुष्य हो पाते हैं। शेखचिल्ली के से सपने यदि सफल हो जाया करते, तो पौरुष और पुरुषार्थ का कोई महत्त्व ही इस संसार में न रहता। कोरी इच्छा, जिसके साथ प्रयत्न, पौरुष, लगन और दृढ़ता न हो, वह निष्फल है। सफलता की देवी ऐसे लोगों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती। सिद्धि उन्हें मिलती है, जो अपनी अभीष्ट वस्तु के लिए जी-जान से प्रयत्न करते हैं।

संत कबीर ने कैसा अच्छा कहा है-
जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।

सिद्धि के, सफलता के इच्छुकों को बाइबिल का यह वचन ध्यान रखना चाहिये कि 'जो सच्चाई से माँगता है, उसे दिया जाता है।' सच्चाई से मांगने का अर्थ है पूरे परिश्रम, उत्साह और समय के साथ इच्छित वस्तु की प्राप्ति में पूरे मनोयोग के साथ जुट जाना। आप यदि सफल मनोरथ होना चाहते हैं, सिद्धि की सीढ़ी पर चढ़ना चाहते हैं तो घोर प्रयत्न और दृढ़ इच्छा को अपना साथी बना लीजिए। आगे बढ़ने और भौतिक एवं आत्मिक दिशा में प्रगति करने के लिए संजीवनी विद्या का आश्रय लेना पड़ेगा।

वाङ्मय खण्ड 21 (अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व), पृष्ठ 8.21-8.23 से संकलित, संपादित

प्रचलित सूक्तियाँ

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
-र्दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
लक्ष्मी उद्योगी पुरुषों को ही प्राप्त होती है और कायर लोग दैव-दैव पुकारा करते हैं।

कायरा इति जल्पन्ति यद्भाव्यं तद्भविष्यति।
कायर लोग ऐसी बकवास करते रहते हैं कि जो होना होगा वही होकर रहेगा।

न प्रसुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगाः।
सोते हुए सिंह के मुख में हिरन खुद प्रवेश नहीं करते, वरन सिंह को ही उन मृगों को पकड़ना और खाना पड़ता है।

दैव-दैव आलसी पुकारा। - रामचरितमानस
भाग्य के भरोसे बैठे रहने से, कल्पना-जल्पनाओं से कुछ प्राप्त नहीं होता। जो निरन्तर उत्साहपूर्वक प्रयत्न करते हैं, वे ही सफलता के भागी होते हैं।

युग संकट के निवारण का सर्वोत्तम साधन है गायत्री महामंत्र

गुरुदेव की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हुए हमें भ्रम-भटकावों, आशंका-कुशंकाओं से बचना और समाज को मुक्त कराना होगा

प्रज्ञा अभियान के गत अंक (16 जनवरी 2025) के संपादकीय आलेख में समय के प्रवाह से प्रभावित होकर युग निर्माण आन्दोलन में बढ़ रही विसंगतियों के बारे में ध्यान आकर्षित किया गया था। इन विसंगतियों का मूल कारण अपने लक्ष्य का बोध न होना और उसके प्रति समर्पण का अभाव है। ऐसी ही भ्रान्त धारणाओं के कारण बहुदेववाद, यज्ञों में अनेक प्रकार की आहुतियाँ देना, लीक से हटकर कथाओं का प्रचलन, कार्यक्रमों में अपने आदर्शों की अवहेलना जैसी अनेक विसंगतियाँ पनप रही हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं परम पूज्य गुरुदेव के ही लिखे कुछ अंश, जो हमें भटकने से बचाकर अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हैं :–

भ्रान्त धारणाएँ टूटें

पूज्य गुरुदेव का कथन है:- *''इन दिनों आत्मिकी के बारे में चल रहे अंधविश्वासों ने जनमान्यता कुछ विचित्र स्तर की बना दी है। समझा जाता है कि आसमान में रहने वाले देवी-देवता बेकार बैठे रहते हैं। उन्हें पूजा कराने की भारी उत्कंठा है। जो उनकी इस आवश्यकता को छोटे रूप में भी, उपेक्षापूर्वक भी पूरा कर दे, उसी को वे अपना भक्त मान लेते हैं और मनोकामना पूर्ण करने के लिए आँख मूँद कर दौड़ पड़ते हैं, उचित-अनुचित जैसा उन्हें कुछ भी सूझता नहीं। पूजा लेने और वरदान देने भर का धंधा उन्होंने अपनाया हुआ है। इसी भ्रमग्रस्तता में देवपूजा के नाम पर आत्मिकी का अधिकांश आडम्बर कागजी रावण की तरह अपना विशालकाय ढकोसला रचे खड़ा है।''*

अपने लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ रहिए

आज हमारे गायत्री यज्ञों में लगभग इसी प्रकार का प्रचलन दिखाई देने लगा है। सभी देवी-देवताओं से वरदान लेने की होड़ में निर्धारित मंत्रों के साथ आहुतियों के अतिरिक्त अनेक अन्य मंत्रों के साथ भी आहुतियाँ देकर उनसे वरदान पाने की होड़ बढ़ती जा रही है। परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र की ही आहुति को देने का विधान बनाया था। विशेष मंत्रों की आहुतियों को विशेष यज्ञ और विशेष प्रयोजन के लिए ही देने का विधान था।

इस संदर्भ में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं:- *''यज्ञीय परंपरा में निश्चित रूप से गायत्री यज्ञ का ही स्थान है। व्यक्ति-कल्याण और समाज-कल्याण के समस्त तत्त्व इसमें विद्यमान हैं। अस्तु यह परम्परा अपने स्थान पर सुदृढ़ और सुनिश्चित ही बनी रहे कि यज्ञ आयोजन की जब कभी आवश्यकता पड़े, तब उसे गायत्री यज्ञ के रूप में ही समझा-करा जाये।''*

अपने वाङ्मय 'यज्ञ एक समग्र उपचार' में वह लिखते है:- *''भारतीय धर्म की सार्वजनीन आस्था में सनातन गायत्री यज्ञ को ही स्थान मिलता रहा है। कहीं-कहीं किसी ने एक या कई वेदों के यज्ञ भी किये, पर यह विस्मरण कर दिया गया कि वेदों में अनेक मंत्र अनेक प्रयोजनों के लिए निर्धारित हैं, उन्हें एक साथ प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए। विवाह और अंत्येष्टि के लिए निर्धारित मंत्रों को एक साथ मिला कर बोला जाए, तो यह अति उत्साह का चिंतनहीन प्रयोग ही कहा जायेगा।''*

हमारे गायत्री यज्ञों की रूपरेखा युग निर्माण की प्रेरणा की दृष्टि से, जनमानस की दृष्टि से, नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी और प्रभावशाली है। साथ ही वह पूर्णतः शास्त्र-भावना के अनुरूप भी है। परम पूज्य गुरुदेव ने धर्मशास्त्रों के कर्मकांड के विधि-विधान का सूक्ष्म अध्ययन करने के उपरांत इस रूपरेखा को सुनिश्चित किया है। इसलिए इसे पूर्ण शास्त्रोक्त एवं धर्मसम्मत मानने में तनिक भी संदेह करने की गुंजाइश नहीं है।

गायत्री ही क्यों?

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है :-

''बेटे! हम हवन कराते हैं, पर देवताओं को बरगलाने के लिए नहीं कराते। हमारा मकसद है कि इंसान के भीतर का जो देवता सो गया है, रूठ गया है, मूर्छित पड़ा हुआ है, उसको हम जगा दें। हवन के माध्यम से, यज्ञ के माध्यम से हम लोगों में सत्प्रवृत्तियाँ पैदा करते हैं। इसलिए हमारे सारे के सारे क्रिया कलापों में उन सब बातों का समन्वय होना चाहिए, जिससे सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन होना संभव हो।'' (वाङ्मय-68, पृष्ठ 204)

इन पंक्तियों में यह स्पष्ट है कि हमारा मुख्य उद्देश्य जीवन देवता को जगाना है। आत्मचेतना के उत्थान और आत्मबल संवर्धन के लिए सबसे प्रभावशाली एवं सबसे शक्तिशाली मंत्र गायत्री महामंत्र ही है। वैज्ञानिकों द्वारा भी यह सिद्ध किया जा चुका है कि दुनिया के समस्त मंत्रों में गायत्री मंत्र ही सर्वाधिक शक्तिशाली है, जिसके उच्चारण से 1,10,000 कम्पन प्रति सेकंड होते हैं। गायत्री मंत्र ही हमारा कलमा है, जिसे आदि मंत्र कहते हैं। समस्या सिर्फ बुद्धि की है, हमारी अक्ल की है। बुद्धि ठीक हो जाये, तो सब कुछ ठीक हो जायेगा।

आज के युग संकट को देखते हुए बिना किसी भ्रम-भटकावों एवं आशंका-कुशंकाओं को जन्म दिये केवल व्यक्तिगत उपासना में ही नहीं, सामूहिक अनुष्ठानों में, सामूहिक यज्ञों में गायत्री महामंत्र का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिए। यह सामान्य नहीं, युगऋषि द्वारा अनुप्राणित व्यक्तिगत, समष्टिगत मन, विचार और भावों को बदलने वाला सबसे शक्तिशाली मंत्र है।

बिखरे समाज को जोड़ेगी गायत्री

''एक दिन हमने आपसे एक बात कही थी कि गायत्री माँ, जो हमारी भारतीय संस्कृति की जीवात्मा है, जो हमारा प्राण है, जो चारों वेदों की जननी है, उसके एक 'सिम्बोल (प्रतीक)' को लेकर हम सारे हिन्दू समाज को एक स्थान पर इकट्ठा कर सकते हैं। जो हिन्दू धर्म हमारे अनेक देवताओं के माध्यम से, सम्प्रदायों के माध्यम से, मतों के माध्यम से, पैगम्बरों के माध्यम से हजारों और लाखों टुकड़ों में फैल गया और बिखर गया है, अब हम इसको फिर से इकट्ठा करना चाहते हैं। हम उसका बिखराव अब बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब हम यह करेंगे कि हिन्दू समाज का कोई न कोई प्रतीक होना चाहिए। कोई न कोई तो एक 'सिम्बल (प्रतीक)' होना चाहिए। कहीं तो एक जगह एकत्र होना चाहिए। राष्ट्रीय झंडे के प्रति हम सारे हिंदुस्तानी नतमस्तक होते हैं। इनमें हिन्दू भी शामिल हैं; मुसलमान भी शामिल हैं; ईसाई भी शामिल हैं। इस माध्यम से जब सारे लोग इकट्ठे किये जा सकते हैं तो क्या हम हिन्दू संस्कृति को इकट्ठा करने के लिए माध्यम तलाश नहीं कर सकते? हाँ, माध्यम हमारा था और वही रहना चाहिए और वही रहेगा। कौन-सा है वह माध्यम? वह है गायत्री मंत्र। गायत्री मंत्र हमारा माध्यम है और वही रह सकता है, दूसरा कोई बन ही नहीं सकता। हमारे पुराण, हमारे कुरान वे हैं, जिन्हें हम वेद कहते हैं। वेद कैसे हैं? और वेदों का मूल हमारा कलमा, हिन्दू का कलमा क्या है? हिन्दू का कलमा एक है और वह है गायत्री मंत्र।

हम दूसरों को भी इज्जत देते हैं। आप किस देवता की पूजा करते हैं, आपको मुबारक, हमें क्या झगड़ना आपसे! आप श्रीकृष्ण भगवान की पूजा करते हैं तो खुशी-खुशी करें और आप 'श्रीकृष्णाय नमो नमः' का जप करें, हमें कोई एतराज नहीं आपसे, लेकिन जब आप यह कहेंगे कि हिन्दू धर्म का मूल है-श्री कृष्णाय नमो नमः, तो हम यह पूछेंगे कि जब पाँच हजार वर्ष पहले भगवान कृष्ण का जन्म नहीं हुआ था, तब आप किसकी पूजा करते थे? श्री कृष्ण भगवान क्या यह जप करते थे-श्रीकृष्णाय नमो नमः। नहीं यह जप नहीं करते थे। पाँच हजार वर्ष पूर्व क्या उपासना थी?'' - (वांग्मय 68, पृष्ठ 210)

सबकी उपास्य गायत्री

इस सन्दर्भ में पूज्य गुरुदेव आगे लिखते हैं, *''मित्रो! अब तक एक ही उपासना रही है हमारी। ब्रह्मा जी को आकाशवाणी के रूप में वह मिली थी, वह था गायत्री मंत्र और जिसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही नहीं, राम और कृष्ण, जो हमारे हिन्दू धर्म के सूर्य और चन्द्रमा माने जाते हैं, उन्होंने भी इस उपासना को अपनाया था। आप भागवत पढ़ लीजिये, आप वाल्मीकि रामायण पढ़ लीजिये। दोनों को जो दीक्षाएँ दी गई थीं, वे गायत्री मंत्र की दीक्षाएँ दी गयी थीं और जब तक दोनों जिन्दा रहे, तब तक वे गायत्री मंत्र की उपासना करते रहे। शिव की उपासना का मंत्र यही है। सूर्यवंशी राजा और चंद्रवंशी राजा जितने भी हुए हैं, सबकी उपासना का मंत्र यही एक है। हमारी संध्या गायत्री के बिना संभव नहीं है। हम गायत्री के बिना संध्या कैसे कर सकते हैं? ...*

हम विवेकशील लोग हैं। हम विचारशील लोग हैं। हम अंधपरंपराओं के अनुयायी नहीं हैं। हम हर चीज को विवेक की कसौटी पर कसते हैं, क्योंकि हमारा मंत्र-हमारी उपासना गायत्री मंत्र है-ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। हम बुद्धि के उपासक हैं, हम विवेक के उपासक हैं, हम तर्क के उपासक हैं, हम दलील के उपासक हैं, हम सच्चाई के उपासक हैं। हम किसी के 'फॉलोवर' नहीं हैं, हम केवल सच्चाई के 'फॉलोवर' हैं। यह सारी की सारी प्रेरणा कहाँ से मिल सकती हैं? ये सारी प्रेरणाएँ गायत्री मंत्र से मिल सकती हैं। इसलिए हम कमर कस कर खड़े हो गए हैं कि गायत्री मंत्र की पूजा करने के लिए हम हर आदमी को मजबूर करेंगे और गायत्री मंत्र की महत्ता को अंगीकार करने और हृदयंगम करने की सलाह देंगे और परामर्श देंगे।''

डेढ़ चावल की खिचड़ी न पकायें

पूज्य गुरुदेव लिखते हैं, *''गायत्री परिवार से मानवता को बड़ी उम्मीदें हैं। आपके जिम्मे जो काम सौंपा गया है, वह सामान्य काम नहीं है, वह असामान्य काम है। आप अपने आपको असामान्य व्यक्ति मानकर चलना और यह मानकर चलना है कि जो उत्तरदायित्व आपको सौंपा गया है, वह सामान्य उत्तरदायित्व नहीं है।''*

इस प्रश्न का इन दिनों एक ही उत्तर है- हम अपने विचार क्रांति के युगधर्म का परिपालन करने के लिए एकनिष्ठ भाव से जुट जायें। आज की समस्याएँ अगणित हैं, उनके स्वरूप और प्रतिफल भी भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु हमें यह मानकर चलना होगा कि सभी का निमित्त कारण एक है, वह है चिंतन में विकृतियों का भर जाना। अनास्था संकट ही अपने युग में विनाश का सबसे बड़ा कारण है। इसके निराकरण का उपाय भी एक ही है, वह है उल्टे को उलट कर सीधा करना। यदि लोकमानस को परिवर्तित-परिष्कृत किया जा सके, तो हर समस्या सरलतापूर्वक सुलझने लगेगी। नाली की कीचड़ साफ किये बिना मक्खी-मच्छरों से पीछा छूटना कठिन है। इस मंत्र को गुनगुनाते रहना चाहिए कि 'एकहि साधे सब सधे-सब साधे सब जाय।' नाम और यश को प्रधानता देने वाले अपनी ढाई ईंट की मस्जिद अलग खड़ी करने को आतुर दृष्टिगोचर होते हैं। डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग से पकाते तो हैं, पर उसमें पेट किसी का नहीं भरता, ढिढोंरा भर पिट जाता है। जिन्हें अपना ढिंढोरा पिटवाना ही अभीष्ट हो, वे चित्र-विचित्र योजनाएँ बनाते और सेवा के नाम पर कौतुक-कौतूहल खड़े करते रहें, पर जिन्हें एक ही चाबी से सब ताले खोलने का मन हो, वे विचार परिवर्तन के कार्य को सर्वोपरि मान कर उसी को लक्ष्य रखें और उसी से सम्बंधित कार्यों में हाथ डालें। (वांग्मय 1, पृष्ठ 6.13)

साँचा बनें, अपना व्यक्तित्व निखारें

पूज्य गुरुदेव का कथन है:- *''हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है, ऐसी शानदार योजना दुनियाँ में आज तक नहीं बनी। क्या योजना बनी है? हमने हर दिन हर पढ़े-लिखे लोगों को नियमित रूप से बिना मूल्य युग साहित्य पढ़ाने की योजना बनाई है। आप पढ़े-लिखे लोगों तक हमारी बात पहुँचा दीजिये, हमारी जलन को, हमारी विचारणा की चिंगारियों को पहुँचा दीजिये।''*

क्या करें?

साँचा बनकर संपर्क करें। हमारा स्तर ऊँचा और अनुशासित होना चाहिए। हमारा व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, जिसका अनुगमन करने का उत्साह लोगों में उभरता चला जाए। एक गाँधी, एक विनोबा, एक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के पीछे करोड़ों लोग चल पड़ते हैं। बढ़िया साँचों में ही बढ़िया खिलौने बनते हैं, आभूषण और कल-पुर्जे ढलते हैं।

अपने तप से, अपनी साधना से, अपने व्यक्तित्व से, विनम्रता से, उदारता से, परमार्थपरायणता से अपने व्यक्तित्व को हम ऊँचा उठाते चलें। यह तभी संभव है, जब परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के आदर्शों के प्रति, उनके स्नेह-संरक्षण के प्रति हमारा गहन विश्वास हो। इस विश्वास के आधार पर ही हमारा समर्पण भाव बढ़ता है। विश्वास कीजिए कि जिसने भी अपने आप को गुरुदेव को सौंपा है, उसका जीवन मूल्यवान होता चला गया है।

परम पूज्य गुरुदेव ने व्यक्तित्व निर्माण के लिए बड़ा सरल-सा समीकरण दिया है। उन्होंने कहा है कि दिन में सात घंटे विश्राम के लिए, आठ घंटे जीविकोपार्जन के लिए और पाँच घण्टे दैनिक दिनचर्या के लिए लगायें। शेष चार घण्टे लोकमंगल के लिए खर्च किये जाने चाहिए। आज की बदली हुई दुनिया में मान लो चार घण्टे न निकाले जा सकें तो दो ही घंटे सही, उसे ईमानदारी से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में लगा सके तो सुनिश्चित मानिये कि हमारा व्यक्तित्व निखरता और ऊँचा उठता चला जायेगा। आज के युग में इतना भी समय न मिलने का बहाना तो शायद ही कोई लगा सके। इंटरनेट और सोशल मीडिया में ही इससे अधिक समय लोग लगा देते हैं।

प्रान्तीय नारी सशक्तीकरण एवं युवा जागरण शिविर

नारी सशक्तीकरण इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।
– श्रीमती शेफाली पण्ड्या

लक्ष्य 2025

आयोजकों ने पीड़ा निवारण अभियान के अंतर्गत प्रखण्डवार मेडिकल कैंप लगाने एवं जरूरतमंदों में 5000 कंबल वितरण करने का लक्ष्य रखा है।

जमशेदपुर। झारखण्ड

नारी परमात्मा की अनुपम कृति है। सरस्वती के रूप में नारी कला और विद्या की देवी है तो दुर्गा के रूप में वह चुनौतियों का सामना करने का साहस भी देती है। वह लक्ष्मी है जो अभावों से मुक्ति दिलाती है। संस्कारवान परिवार, सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में नारी की अहम भूमिका है, इसलिए नारी सशक्तीकरण इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी ने 29 दिसम्बर को जमशेदपुर में सिदगोड़ा स्थित बिरसा मुंडा टाउन हॉल में आयोजित तीन दिवसीय नारी सशक्तीकरण एवं युवा जागरण शिविर के समापन समारोह को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया। उन्होंने युवाओं को व्यसन और कामुकता से बचकर अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर झारखंड के 24 जिलों से आए लगभग 1100 युवा और महिलाएँ उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी के साथ जमशेदपुर पूर्वी क्षेत्र की विधायक श्रीमती पूर्णिमा दास ने

मंच पर आद. शेफाली जी का भावभरा स्वागत

समापन समारोह का उद्‌घाटन किया। तीन दिवसीय शिविर के दूसरे दिन आयोजित विराट दीप महायज्ञ की दिव्यता देखते ही बनती थी। 24,000 प्रज्वलित दीपकों की दिव्य आभा से सूर्य मंदिर परिसर जगमगा उठा। इस अवसर पर श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी के साथ आदरणीय श्री रघुवर दास ने दीप जलाकर समस्त श्रोताओं को समाज में अच्छाई और सकारात्मकता की ज्योति फैलाने का संकल्प दिलाया।

श्री सुरेश कुमार ने शाखा की सक्रियता का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रज्ञा महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती जसवीर कौर ने समस्त अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्रीमती श्यामा राठौर, श्रीमती अरुंधती साहू की ब्रह्मवादिनी टोली पहुँची थी। कार्यक्रम की सफलता में युवा प्रकोष्ठ शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने अहम योगदान दिया।

महिला स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण केंद्र में लगाई गई स्थायी फोटो गैलरी

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत करती श्रीमती क्षेत्री

देहरादून। उत्तराखंड

22 दिसम्बर 2024 को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण केंद्र, रानी पोखरी, देहरादून में फोटो गैलरी का उद्घाटन हुआ। यह फोटो गैलेरी गायत्री परिवार के 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की प्रेरणा देने वाली है। अभियान की राष्ट्रीय समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा (भूतपूर्व महानिदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण उत्तर प्रदेश) ने इसका उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. चंद्रप्रकाश त्रिपाठी (निदेशक) और डॉ. संजय जैन (मुख्य चिकित्सा अधिकारी) की गरिमामयी उपस्थिति रही।

प्रशिक्षण केंद्र की मुखिया श्रीमती राजी क्षेत्री और उनके समस्त कर्मचारियों ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा प्रेरक नाटिका की शानदार प्रस्तुति की गई, जिसे सभी दर्शकों ने सराहा। इस कार्यक्रम की सफलता में शान्तिकुञ्ज हरिद्वार की टीम सहित रानी पोखरी, ऋषिकेश और भोगपुर प्रज्ञा मंडल के कार्यकर्ताओं का सक्रिय योगदान रहा।

ओंकारेश्वर उपजोन की क्रान्तिकारी बेटियाँ

प्राणवान संकल्प उभरे

- 2400 कन्याओं का दीक्षा संस्कार करा कर उन्हें सद्ज्ञान विस्तार आन्दोलन में सहयोगी बनाना।
- 108 कन्याओं को मोटर साइकिल चलाना सिखाना, ताकि वे गाँव-गाँव जाकर युगचेतना का विस्तार कर सकें।

नारी सशक्तीकरण का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत कर रही मध्यप्रदेश के ओंकारेश्वर उपजोन की कन्याओं ने 29 से 31 दिसम्बर की तिथियों में शान्तिकुञ्ज में आयोजित ज्योति कलश रथ यात्रा कार्यशाला में खंडवा जिले की प्रत्येक तहसील में अखंड ज्योति पत्रिका और पाक्षिक प्रज्ञा अभियान को पहुँचाने के क्रान्तिकारी संकल्प लिये हैं। ग्राम आँवलिया की नंदिनी पटेल शान्तिकुञ्ज से कार्यशाला में भाग लेकर पैर में बिना चप्पल पहने ही लौटी। उसने संकल्प लिया है कि 111 अखंड ज्योति के और 124 प्रज्ञा अभियान के नए सदस्य बनाने के पश्चात ही वह पैर में चप्पल पहनेगी।

देवग्राम आंवलिया की नंदिनी पटेल ने गुरुधाम, शान्तिकुञ्ज में लिया संकल्प, अखण्ड ज्योति के 108 सदस्य बनाने के बाद ही चप्पल पहनूँगी।

"मेरा जीवन, मेरा शरीर सिर्फ गुरुदेव के कार्य के लिए है। मैं वैवाहिक जीवन जीने की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ की ज्योत जलाकर समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना बेहतर समझती हूँ।" – पूर्णिमा पंवार

कन्या कौशल शिविर सिरसौद, जिला खंडवा में 5100 कन्याओं की भागीदारी रही थी। इस आयोजन की सफलता में अहम भूमिका निभाने वाली बेटियाँ पूर्णिमा पंवार, नेहा जाट आदि का संकल्प है कि वे इस कार्यक्रम के अनुयाज के क्रम में 2400 कन्याओं के जीवन को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई गई आदर्श जीवन शैली में ढालेंगी, उन्हें दीक्षा दिलाएँगी और अखण्ड ज्योति, प्रज्ञा अभियान आदि पत्रिकाओं के पाठक बनाकर रचनात्मक आन्दोलनों को गति प्रदान करेंगी।

संवाददाता : श्री महेंद्र भावसार, बड़वानी

अत्यंत सफल हो रहे हैं कन्या कौशल शिविर

हर शिविर में गढ़ी जा रही हैं सैकड़ों युग निर्माणी बेटियाँ

आष्टा, सिहोर। मध्य प्रदेश

खण्डवा जिले की बेटियों द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष तक 2400 युग निर्माणी कन्याओं के निर्माण के संकल्प के अंतर्गत आष्टा तहसील के खाचरोद ग्राम में तीन दिवसीय कन्या कौशल प्रशिक्षण संपन्न हुआ। इसमें कई गाँवों की बालिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम बहुत सफल और प्रभावशाली रहा। आरंभ में वीरांगना कन्या संस्कार जागरण यात्रा निकाली गई। क्रान्तिकारी प्रज्ञा गीत एवं नारों ने उन्हें अथाह उत्साह से भर दिया।

शुभ संकल्पों की मंगल आरती उतारती 24 कन्याएँ

151 बेटियों ने गुरुदीक्षा ली। समापन सत्र में 24 कन्याओं ने नवयुग की मंगल आरती की। समस्त प्रतिभागियों ने अपने-अपने गाँव में कन्या मंडलों का गठन करने एवं जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने, थाली में जूठन न छोड़ने, नियमित उपासना-साधना करने जैसे संकल्प लिये।

8 बहिनों ने नई बाल संस्कारशाला के संकल्प लिये

माकड़ोन, उज्जैन। मध्यप्रदेश

गायत्री परिवार द्वारा माकड़ोन में आयोजित चार दिवसीय जिला स्तरीय कन्या कौशल शिविर में 197 कन्याओं ने भाग लिया। इस अवसर पर श्रीयुत् श्रीकृष्ण शर्मा, प्रांतीय समन्वयक, शिक्षा आंदोलन ने कहा कि कन्याएँ कीर्ति, धैर्य, सुख, समृद्धि, शक्ति, शांति, क्षमता और प्रसन्नता जैसे दैवी गुणों की पर्याय होती हैं। इन्हीं गुणों के कारण इनका श्रद्धा भाव से पूजन किया जाता है।

नवदम्पतियों को दी मित्रभाव बढ़ाने की प्रेरणाएँ

अंतिम सत्र में दम्पति सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें 35 से अधिक दंपतियों ने भाग लिया। दंपतियों को सच्चे मित्र बनकर बच्चों को स्नेह और प्यार से मार्गदर्शन देने की सलाह दी गई, ताकि वे जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ सकें।

इस शिविर में भाग लेने वाली कन्याओं को दैनिक दिनचर्या को सुव्यवस्थित करने, योग, ध्यान, मंत्र जप, बलिवैश्वदेव यज्ञ, वीरांगनाओं की जीवन कथाएँ, परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने के तरीके, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी जैसे जीवनोपयोगी विषयों का परिचय दिया गया। शिविर में 8 बहिनों ने अपने गाँव या मोहल्ले में बाल संस्कारशाला चलाने का संकल्प लिया। प्रतिभागी कन्याओं ने शिविर के अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद से कहीं अधिक ज्ञान मिला और वे इसे अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करेंगी।

गायत्री परिवार उज्जैन के उप जोन समन्वयक श्री महेश आचार्य, जिला समन्वयक श्री नरेंद्र सिंह सिकरवार, वरिष्ठ गायत्री परिजन श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री राम प्रसाद सरिया, श्री महेश बडिया और निशा धनोतिया ने प्रतिभागी कन्याओं को पुरस्कार और स्मृति चिह्न प्रदान किए। कार्यक्रम का संचालन श्री मुकेश पाटीदार ने किया, जबकि आभार श्री एम.एल. सोनी ने व्यक्त किया।

200 दम्पतियों को सफल दाम्पत्य जीवन के सूत्र बताये

डलमऊ, रायबरेली। उत्तरप्रदेश

युवा प्रकोष्ठ जनपद रायबरेली के संयोजन में डलमऊ कस्बे में जनपद स्तरीय नवदम्पति सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें 200 दम्पति सहित सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे। उप जोन समन्वयक श्री कैलाश नारायण तिवारी जी ने दाम्पत्य जीवन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभी को परस्पर सहकार, समन्वय व समर्पण के साथ अपने दाम्पत्य जीवन को मधुर और यशस्वी बनाने के सूत्र दिये, संकल्प कराए।

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रभारी

आदर्श दाम्पत्य जीवन की शपथ लेते युगल

प्रभाकर सक्सेना जी ने परिवार संस्थाओं के अस्तित्व पर बढ़ते संकट की चर्चा करते हुए युवाओं से गायत्री परिवार की सत्प्रवृत्तियों के साथ जुड़ने का आह्वान किया। श्री वी.बी. सिंह ने गायत्री परिवार रायबरेली के कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन जिला युवा समन्वयक श्री सुधांशु त्रिपाठी ने किया। अध्यक्ष नगर पंचायत डलमऊ श्री बृजेश दत्त गौड़ ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए इस प्रकार के कार्यक्रमों को सभ्य समाज के निर्माण में बहुत उपयोगी और आवश्यक बताया।

नववर्ष पर नगर में प्रथम दम्पति सम्मेलन का आयोजन

आगरा। उत्तरप्रदेश

गायत्री परिवार आगरा द्वारा वर्ष 2025 का स्वागत सिकन्दरा सेक्टर-5 स्थित श्री दुर्गा मंदिर पार्क में दो दिवसीय कार्यक्रम के साथ किया गया। 31 दिसम्बर को सायं दीपयज्ञ और 1 जनवरी को प्रातः 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 600 श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ दीं।

यज्ञोपरांत दम्पत्ति सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 55 दम्पत्तियों ने भाग लिया। यह नगर में अपनी तरह का प्रथम आयोजन था, जिसमें विवाह के समय पति-पत्नी द्वारा ली गई प्रतिज्ञाओं का स्मरण कराया गया। श्री जयप्रकाश वर्मा ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये पारिवारिक जीवन के आदर्श सूत्रों की चर्चा करते हुए विवाह की प्रतिज्ञाओं को सफल और सुखद जीवन का राजमार्ग बताया।

सम्मेलन में भाग ले रहे दम्पत्तियों ने एक-दूसरे को चन्दन का तिलक किया और रक्षासूत्र बाँधने के साथ दाम्पत्य जीवन के आदर्श निर्वाह की शपथ ली।

आँवलखेड़ा से आई श्री दीनदयाल जी की टोली ने यज्ञ का संचालन किया। सुरेशचन्द्र यादव, विजयपाल सिंह बघेल और कई अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

शान्तिकुञ्ज ने 1280 जरूरतमंदों में बाँटें कंबल

उत्तर भारत में इन दिनों पड़ रही कड़ी ठंड से साधुओं और खुले आसमान के नीचे रहने वाले लोगों को काफी परेशानी हो रही है। पीड़ित मानवता के प्रति सहृदय स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने मकर संक्रांति के दिन हरिद्वार में ठंड में ठिठुरते जरूरतमंदों में कंबल वितरित कराये। कंबल वितरण करने निकली टोली का नेतृत्व स्वयं शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी ने किया। टोली ने देर रात में हरिद्वार के सर्वानंद घाट, शिव की पौड़ी, पावन धाम, खड़खड़ी आदि स्थानों में जाकर 1280 जरूरतमंदों को कंबल दिये। कंबल दिये ही नहीं, बल्कि मानव सेवा-माधव सेवा के भाव से स्वयं सोते हुए लोगों को कंबल ओढ़ाये।

यह कंबल उन्हें दिये गए, जो गंगातट पर पेड़ों और फ्लाई ओवर के नीचे रात बिता रहे थे। सिकुड़े, दबे गरीबों को मिली कंबल की ऊष्मा उनके मुखमंडल पर साफ दिखाई देती थी। अनेक लोगों ने शान्तिकुञ्ज की इस सेवा के लिए हृदय से आशीर्वाद दिये। कंबल वितरित करने गयी टीम में इंद्रजीत सिंह, रामदास रघुवंशी, संजय, कृष्णा अमृते, अरुण, आलोक, दुर्गा आदि शामिल रहे।

मध्य रात्रि में ठंड से ठिठुरते जरूरतमंदों को कंबल ओढ़ाते शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी

मानव सेवा माधव सेवा ही है

श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा साक्षात ईश्वर की ही सेवा है। अध्यात्म का अर्थ है आत्मीयता का विस्तार। जिससे जितना संभव हो, उसे पीड़ितों की सेवा-सहायता में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए। शान्तिकुञ्ज इस दिशा में अपने स्थापना काल से ही जरूरतमंदों की सेवा-सुश्रुषा करता आ रहा है।

देसंविवि में संपन्न हुआ आध्यात्मिक योग रिट्रीट

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और ध्यानस्थ योग के सहयोग से 28 दिसंबर से 2 जनवरी तक देसंविवि के दिव्य परिसर में आध्यात्मिक योग रिट्रीट आयोजित किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न शहरों से आए प्रतिभागियों ने भाग लेकर योग दर्शन, ध्यान और गुरुदेव के संदेशों के माध्यम से योग के प्राचीन ज्ञान और परंपराओं का गहन अनुभव किया।

माननीय प्रति कुलपति जी के संग योग रिट्रीट के प्रतिभागी

कार्यक्रम की शुरूआत विश्वविद्यालय के पवित्र स्थलों के भ्रमण और प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंडया जी के मार्गदर्शन से हुई, जिन्होंने प्रतिभागियों को योग को जीवन का मार्ग बनाने और आत्मिक एवं शारीरिक संतुलन का साधन मानने के लिए प्रेरित किया।

प्रतिभागियों के रिट्रीट का समापन एक भव्य समारोह के साथ हुआ, जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरण करते हुये विश्वविद्यालय के आध्यात्मिक मिशन से गहरे जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। इस रिट्रीट ने प्रतिभागियों को न केवल योग की प्राचीन परंपराओं से जोड़ा, बल्कि उन्हें आंतरिक शांति और संतुलन प्राप्त करने की दिशा में नई प्रेरणा भी दी।

गुरुदेव की गोद में जा पहुँची उनकी प्यारी बेटी श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता

शान्तिकुञ्ज की समर्पित जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता 6 जनवरी 2025 को अपनी जीवन लीला समाप्त कर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गई। स्व. श्रीमती दत्ता जी ब्रह्मवर्चस में वैज्ञानिक के रूप में सेवाएँ प्रदान कर चुके परम पूज्य गुरुदेव के अनन्य शिष्य-साधक स्व. डॉ. अमल कुमार दत्ता जी की धर्मपत्नी थीं। 90 वर्षीया श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता डॉ. ए.के. दत्ता जी के साथ सन् 1983 में शान्तिकुञ्ज आ गए थे।

पूज्य गुरुदेव से मिला था जीवनदान

डॉ. अमल कुमार दत्ता और श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता उन दिनों इन्दौर में रहते थे। एक बार श्रीमती दत्ता जी बहुत बीमार पड़ी थीं, उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, उस समय डॉ. अमल कुमार दत्ता जी को परम पूज्य गुरुदेव ने एक पत्र लिखा, वह यहाँ प्रस्तुत है :-

हमारे आत्मस्वरूप,

आपका पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यों पिछले सप्ताह हमारा सूक्ष्म शरीर इन्दौर ही रहा है। रोग अबकी बार अतीव-कष्ट लेकर आया था। हमें प्रतीत हो रहा था कि बेटी श्रीपर्णा इस कष्ट को सहन न कर सकेगी, इसलिये सुरक्षा के लिये हमारा सूक्ष्म शरीर आप लोगों के पास ही बना रहा। आप लोगों ने दौड़-धूप की उससे हमें सन्तोष है। कर्तव्य पालन इसी प्रकार करना चाहिए, किन्तु इतने पर भी बेटी श्रीपर्णा की इस बार की जीवन रक्षा का श्रेय माता की विशेष कृपा को ही है। अब अनिष्ट टल गया है। जो कमजोरी रही होगी, वह भी जल्दी ही दूर हो जायेगी।

बीमारी के समय जिन-जिन स्वजनों ने सेवा एवं सहानुभूति का व्यवहार किया हो, उन सबको हमारा धन्यवाद कहना। तुम्हारी धर्मपत्नी भी वह है, ***पर असल में तो हमारी प्रिय पुत्री ही है। तुमने या जिसने भी उसकी सेवा की है उन सबके हम हृदय से कृतज्ञ हैं।***

जब तक सौ. श्रीपर्णा की तबियत पूरी तरह ठीक नहीं हो जाती तब तक हमें चिन्ता बनी रहेगी, सो उसका समाचार हमें भेजते रहें। यों सूक्ष्म शक्ति से हम उसकी आवश्यक जानकारी रख ही रहे हैं और सम्पर्क भी बनाये हुये हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता के नाम भी पत्र लिखा। उसमें उन्होंने लिखा, *''इस नये जीवन को तुम ऋषि पुत्री, ऋषि पत्नी और ऋषि माता की तरह व्यतीत करना।''*

जिन्होंने नया जीवन दिया, श्रीमती श्रीपर्णा दत्ता ने उनके लिए ही अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके दबाव डालने पर ही डॉ. ए.के. दत्ता शान्तिकुञ्ज आये थे। उन्होंने गुरुदेव का कर्ज चुकाने के भाव से आजीवन परम पूज्य गुरुदेव के आदर्शों के अनुरूप सादा जीवन जिया। डॉ. दत्ता इंदौर, देवास, जावरा, खरगोन, गुना, झाबुआ आदि में शासकीय सेवाओं में रहे, वहाँ उन्होंने यज्ञ शृंखलाएँ चलाते हुए अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान कीं।

शान्तिकुञ्ज में उन्होंने गायत्री विद्यापीठ की प्रधानाचार्या से लेकर महिला मण्डल के संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान में वे बंगला प्रकोष्ठ का कार्यभार सँभाल रही थीं। उनका बंगला साहित्य प्रकाशन में अविस्मरणीय योगदान है। जीवन के अंतिम दिनों तक वे बंगला में साहित्य भाषांतर करती रहीं। बंगला साहित्य प्रकाशन में अपना धन भी लगाया। अपनी सारी बचत राशि मिशन को सौंपकर गई हैं।

नवचेतना जगाती ज्योति कलश यात्राएँ

उज्जैन में भव्य स्वागत हुआ, महाशिवरात्रि से होगा शुभारंभ

एकता-समता का दिव्य संदेश दे रहे हैं ज्योति कलश। - महंत तुलसीदास जी महाराज

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में शक्ति कलशों का स्वागत

उज्जैन। मध्यप्रदेश

आगामी महाशिवरात्रि से मध्यप्रदेश प्रान्त में पाँच ज्योति कलश यात्राएँ निकाली जा रही हैं। 29 से 31 दिसंबर 2024 की तिथियों में शान्तिकुञ्ज में श्रद्धेया शैल जीजी ने इन पाँचों ज्योति कलश यात्राओं के लिए शक्ति कलशों का पूजन किया। 4 जनवरी 2025 को यह शक्ति कलश गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में पहुँचे, जहाँ उनका विधिवत पूजन किया गया। उज्जैन उपजोन के समन्वयक श्री महेश आचार्य जी ने इस अवसर पर प्रदेश में ज्योति कलश यात्राओं की सम्पूर्ण योजना और उसके महत्त्व की चर्चा की।

शक्ति कलशों का स्वागत करने वालों में प्रमुख खाकी अखाड़ा अंकपात क्षेत्र के महंत तुलसीदास जी महाराज ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि ज्योति कलश का आगमन हमारे लिए बड़े भाग्य की बात है। इन कलशों से हमें एकता और समता का दिव्य संदेश प्राप्त हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश से आगामी ज्योति कलश यात्राओं में अग्रणी भूमिका निभाने जा रहे 1500 कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज में आयोजित ज्योति कलश यात्रा सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे थे।

शान्तिकुञ्ज से पहुँचे पाँचों शक्ति कलश महाशिवरात्रि के दिन यात्राएँ आरंभ होने तक गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में ही प्रतिष्ठित हैं, जहाँ श्रद्धालु उनके सान्निध्य में साधना-दर्शन, पूजन का लाभ ले रहे हैं।

उपयात्रा निकालकर उत्साहवर्धक वातावरण बनाया

सुंदरबनी, जम्मू। जम्मू-कश्मीर

युगशक्ति गायत्री के प्रति आस्था जगाने के साथ सांस्कृतिक उत्थान व स्वावलम्बन के लिए भी प्रतिष्ठित गायत्री शक्तिपीठ सुंदरबनी अपने क्षेत्र में ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम से लोगों की आस्थाओं को झकझोरने के लिए बहुत उत्साहित है। शक्तिपीठ ने मुख्य यात्रा से पूर्व अपने क्षेत्र में सात दिवसीय उप ज्योति कलश यात्रा निकाली।

22 दिसम्बर को गायत्री शक्तिपीठ सुन्दरबनी, लोहारा कोर्ट में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ यात्रा का शुभारंभ हुआ। भाजपा अध्यक्ष श्री नसीब सिंह ने इसे हरी झंडी दिखाई। प्रथम दिन नगर के कई प्रतिष्ठित मंदिरों में स्वागत समारोह हुए। दुर्गा माता मंदिर में दीपयज्ञ और अगले दिन यज्ञ के साथ नगरवासियों को ज्योति कलश यात्रा का महत्त्व बताया गया।

सात दिनों में यह यात्रा नगर के हर मोहल्ले और आसपास के कई गाँवों में पहुँची। गाँव-गाँव यज्ञ, दीपयज्ञ के आयोजन हुए। सभी को जन्मशताब्दी वर्ष तक के आगामी दो वर्षों में मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य और युगशक्ति गायत्री की पुनः प्रतिष्ठा से समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए नियमित गायत्री मंत्र जप और गायत्री मंत्र लेखन साधना की प्रेरणा दी गई।

इस सात दिवसीय उपयात्रा से मुख्य यात्रा के स्वागत-पूजन और उसके उद्‌देश्य को पूरा करने की दिशा में शानदार जनउत्साह उभरा है।

सारण और सिवान जिले में गाँव-गाँव स्वागत समारोह

बिहार के सारण और सिवान जिलों में चल रही ज्योति कलश यात्राओं का हर क्षेत्र में भव्य स्वागत हो रहा है। 24 दिसम्बर को नगरा प्रखण्ड के खैरा गाँव से ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ। तब से 5 जनवरी तक इस ज्योति कलश यात्रा ने सारण जिले के नगरा, मढौरा, तरैया, अमनौर, दिघवारा, गरखा प्रखण्ड के गाँवों में घर-घर गायत्री की प्रतिष्ठा के सुंदर प्रयास किये। प्रतिदिन 7-8 गाँवों में जनजागरण अभियान चलाया गया। गायत्री यज्ञ एवं दीपयज्ञ सम्पन्न कराये गए।

ज्योति कलश यात्रा के स्वागत में आध्यात्मिक संगठनों और विभिन्न मंदिरों के साथ प्रबुद्ध एवं युवा वर्ग का विशेष उत्साह दिखाई दिया। लोगों ने मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए मातृशक्ति जन्मशताब्दी साधना अनुष्ठान में भागीदारी के संकल्प लिये।

6 जनवरी से ज्योति कलश यात्रा ने गायत्री शक्तिपीठ सिवान से सिवान जिले के विविध प्रखण्डों में यात्रा आरंभ की। दो दिनों में यह यात्रा मैरवा, गुठनी में पहुँची। 7 जनवरी को चिताखाल, बलुआ, सेलोर, अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल, बाबा हंसनाथ सोहागरा धाम, दरैला बाजार और खिलवा गाँवों में रथ का स्वागत और पूजन हुआ, दीपयज्ञ भी संपन्न कराया गया।

गायत्री मंत्र और नशामुक्ति के नारों से गूँजी गाँव की गलियाँ

राजोदा के 52 घरों में यज्ञ हुए

देवास। मध्यप्रदेश

ग्राम राजोदा में 12 जनवरी-अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के दिन गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के अंतर्गत 52 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। यज्ञ से पूर्व उज्जैन उपजोन समन्वयक श्री महेश आचार्य के नेतृत्व में पूरे गाँव में जन जागरण रैली निकालकर ग्रामवासियों को अपने गाँव को आदर्श ग्राम, हर परिवार को देव परिवार बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ग्राम राजोदा की गलियाँ गायत्री महामंत्र और नशामुक्ति के नारों से गूँजती रहीं।

लोकप्रिय विधायक श्री मनोज चौधरी एवं अन्य गणमान्यों द्वारा देवपूजन के बाद जनजागरण रैली को रवाना किया गया। माननीय विधायक ने गायत्री परिवार के आयोजन में शामिल होने को बड़ा सौभाग्य बताया। जिला समन्वयक हरिराम जिराती एवं युवा समन्वयक प्रमोद निहाले ने देव परिवार और आदर्श ग्राम निर्माण के सूत्र बताए।

हर घर पहुँचेगा प्रज्ञा अभियान

ग्राम राजोदा के जिन 52 घरों में यज्ञ हुआ, उन सभी को प्रज्ञा अभियान का सदस्य बनाया गया। जिला संगठन ने निर्णय लिया कि जहाँ भी यज्ञ होंगे, उनकी आस्थाओं का निरंतर पोषण करने के लिए हर पंद्रह दिन में उन तक प्रज्ञा अभियान अवश्य पहुँचाया जाएगा।

हर क्षेत्र में युगशक्ति गायत्री के प्रति बढ़ती आस्था

2000 दीक्षा एवं 500 यज्ञोपवीत संस्कार

बरघाट, सिवनी। मध्यप्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ बरघाट द्वारा 22 से 25 दिसम्बर की तिथियों में 108 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन की दृष्टि से यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। तीन से पाँच हजार लोगों ने प्रतिदिन यज्ञ में भाग लिया। आयोजकों का कहना है कि सामूहिक दीक्षा के अवसर पर लगभग दो हजार लोगों ने दीक्षा ली और पाँच सौ लोगों ने यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराये।

यज्ञ का शुभारंभ 1,100 कलश और आकर्षक झाँकियों की भव्य शोभा यात्रा के साथ हुआ। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री सुनील शर्मा की टोली ने श्रोताओं से अपनी सनातन ऋषि संस्कृति को अपनाते हुए सद्गुणी और संस्कारवान बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जन्मशताब्दी वर्ष में सांस्कृतिक चेतना के नवजागरण के लिए संगठित प्रयासों का आह्वान भी किया।

विज्ञान महाविद्यालय में 9 कुण्डीय यज्ञ

आध्यात्मिक वातावरण से भावविभोर हुए छात्र-छात्राएँ

भुबनेश्वर। ओडिशा
आद्यन्त विज्ञान महाविद्यालय में दिनांक 23 दिसंबर को 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ रखा गया था। सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ और लगभग 600 छात्र-छात्राएँ इस यज्ञ में भाग लेने पीले वस्त्रों में पहुँचे थे। विद्यार्थियों ने 108 कलशों की शोभायात्रा भी निकाली। सभी इस दिव्य आध्यात्मिक वातावरण से भावविभोर थे।

महाविद्यालय के चेयरमैन श्री अजय बहादुर सिंह और प्रिंसिपल श्रीमती प्रतिभा त्रिपाठी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यज्ञ के बीच रायगढ़ के श्री संजय गौतम के अलावा रविन्द्र भाई एवं संतोष जेना ने विद्यार्थियों को अपने जीवन को आध्यात्मिकता के साँचे में ढालकर नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं। श्री अजय बहादुर सिंह ने बच्चों को चरित्र निर्माण और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणाएँ दीं।

कलश यात्रा में भाग लेकर लौटी छात्राएँ एवं यज्ञ करते परिजन-विद्यार्थी

असम में आस्था के दिव्य दर्शन

शिवसागर। असम : शिवसागर जिले के फुकन नगर स्थित गायत्री शक्तिपीठ में चार दिवसीय नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। पूर्वोत्तर के हजारो भक्तों ने इस महायज्ञ में भाग लिया। आयोजकों ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए गायत्री परिवार के यज्ञ अभियान को राष्ट्र के नवनिर्माण का एक क्रान्तिकारी अभियान बताते हुए क्षेत्र में घर-घर गायत्री यज्ञों की परंपरा आरंभ करने की प्रेरणा दी।

गायत्री परिवार के अशोक कुमार साहू, दुर्गा अग्रवाल, बिट्टू गुप्ता, रवि चौबे, विदित चन्द्र गोहाई, मीना गोयल, संजय अग्रवाल, मनीष खंडेलिया, रवि शर्मा सहित कई भक्तों के विशेष योगदान से इस महायज्ञ का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

51 बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार

गोकुलपुर, धमतरी। छत्तीसगढ़ : आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अंतर्गत गोकुलपुर में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं सामूहिक संस्कार समारोह का आयोजन किया गया। इसमें 51 गर्भवती महिलाओं का पुंसवन संस्कार हुआ। कथा वाचक परमानंद जी ने कहा कि जो माता के गर्भ को मंदिर जैसी प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं, उनके गर्भ से संस्कारवान, ज्ञानवान और गुणवान संतानें जन्म लेती हैं।

नशा मुक्त समाज के निर्माण का संकल्प लिया

इस कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्र के हजारों लोग इस संस्कार समारोह में शामिल हुए। 47 गुरुदीक्षा, 55 विद्यारंभ, 48 विवाह दिवस, 12 मुण्डन व अन्य संस्कार भी हुए। इस दिव्य आयोजन में उपस्थित हजारों परिजनों ने नशा मुक्त समाज की स्थापना का संकल्प लिया। आयोजन की सफलता में श्री एस. आर. प्रजापति की उपस्थिति और आयोजन समिति के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

पाठक सम्मेलनों में अखण्ड ज्योति पत्रिका की सदस्यता बढ़ाने के संकल्प उभरे

संख्या दोगुनी करेंगे

मुलताई। मध्यप्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ मुलताई में दिनांक 12 दिसम्बर 2024 को आयोजित तहसील स्तरीय अखंड ज्योति पाठक सम्मेलन में अखंड ज्योति पत्रिका के सदस्यों की संख्या दो गुनी करने का संकल्प लिया गया है। सनावद, खरगोन से डॉ. सोहनलाल गुर्जर, दिनेश देशमुख (उपजोन समन्वयक, छिंदवाड़ा) और वर्षा गडेकर (नगर पालिका अध्यक्ष), पूर्व विधायक डॉ. बोरखे, डॉ. बारस्कर सहित कई गणमान्यों ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए इसके स्वाध्याय से जीवन में आए क्रान्तिकारी परिवर्तनों के प्रेरक संस्मरण सुनाए।

कार्यकर्ता सम्मान और समयदान का संकल्प

सम्मेलन में अखण्ड ज्योति पत्रिका के वितरक सृजन सैनिकों को सम्मानित किया गया। अनेक कार्यकर्ताओं ने पावन गुरुसत्ता के विचार क्रान्ति अभियान को गाँव-गाँव, घर-घर तक पहुँचाने के लिए नित्य समयदान का संकल्प लिया।

जबलपुर में आयोजित पाठक सम्मेलन

जबलपुर। मध्यप्रदेश : गायत्री परिवार ट्रस्ट जबलपुर द्वारा 22 दिसम्बर को महाकौशल चेम्बर ऑफ कॉमर्स, सिविक सेंटर में अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन का भव्य आयोजन किया। इसमें भाग ले रहे पाठक, श्रद्धालुओं को गायत्री परिवार की ओर से श्री बी.बी.शर्मा, तपोभूमि मथुरा के प्रतिनिधि श्री भृगुनाथ तिवारी, न्यायाधीश श्री अजय सिंह ठाकुर, डॉ. अखिलेश गुमास्ता और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों से मार्गदर्शन मिला।

श्री भृगुनाथ तिवारी ने अखण्ड ज्योति को परम पूज्य गुरुदेव की विचार क्रांति का प्रमुख माध्यम, प्रेम का सागर और राष्ट्र की आत्मा बताया। श्री जगदीश दीक्षित जी ने इसके उद्देश्य, विशेषताएँ और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जानकारी दी। यह सम्मेलन समाज में जागरूकता और सकारात्मक सोच बढ़ाने का एक प्रभावशाली प्रयास था।

इकलेरा (पचोर) राजगढ़। मध्यप्रदेश : इकलेरा गाँव में 22 दिसंबर को गायत्री परिवार तहसील पचोर की गोष्ठी आयोजित हुई। इस बैठक में जिला समन्वयक श्री ओ.पी. पंवार और जिला सह समन्वयक श्री किशोर जनोरिया के मार्गदर्शन में जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाले आयोजनों की तैयारियों पर चर्चा की गई।

आगामी कार्यक्रमों में प्रज्ञा मंडल और युवा मंडलों के पुनर्गठन के अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना और प्रज्ञा अभियान पत्रिकाओं के सदस्यों की संख्या बढ़ाने, घर-घर गायत्री यज्ञ कराने और गाँव में बाल संस्कार केंद्र चलाने हेतु निर्णय लिया गया।

हंगरी के क्रिस्टोफ का वैदिक विधि-विधान से विवाह

गायत्री परिवार की विवाह परंपरा से बहुत प्रभावित हुए बाराती

मुरादाबाद। उत्तरप्रदेश : मुरादाबाद निवासी श्री विपिन अग्रवाल की पुत्री पलक का विवाह हंगरी निवासी श्री क्रिस्टोफ से मुरादाबाद में गायत्री परिवार के विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। हंगरी से 19 बाराती भारत आए। श्रीमती मृदुला त्यागी ने विवाह के मंत्र पढ़े, श्री दीपक त्यागी ने अंग्रेजी भाषा में टिप्पणियों के साथ उनका भावार्थ समझाया। 1 जनवरी को आयोजित इस वैदिक परम्परा से यूरोपियन मेहमान बहुत प्रभावित हुए। उनका मत था कि भारत की यह संस्कार परम्परा नि:संदेह दाम्पत्य जीवन में प्रेम, सद्भाव, सामंजस्य को बढ़ाने वाली है।

श्री दीपक त्यागी जी ने बताया कि श्री विपिन अग्रवाल की इच्छा थी कि उनकी बेटी का विवाह गायत्री परिवार की परंपरा से ही सम्पन्न हो। इसके लिए उन्होंने दो माह पूर्व से ही विवाह का पूरा विधि-विधान और उसका औचित्य अंग्रेजी भाषा में नव विवाहित दम्पति को भेज दिया था। इससे प्रभावित होकर ही पलक और क्रिस्टोफ विवाह संस्कार सम्पन्न कराने मुरादाबाद आये थे। इस संस्कार समारोह को सम्पन्न कराने में श्रीमती सुषमा मेहरोत्रा का भी सहयोग रहा।

देश-विदेश में प्रगतिशील विचारों के साथ आयोजित हुए नववर्ष के स्वागत समारोह

शंख निनाद के साथ निकाली शोभायात्रा

लखीमपुर। उत्तरप्रदेश : गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर और महिला मंडल द्वारा नववर्ष 2025 का शुभारंभ शंख निनाद शोभायात्रा के साथ किया गया। गोला रोड स्थित गायत्री शक्तिपीठ से गायत्री महामंत्रोच्चारण के साथ पीत वस्त्रधारी महिलाओं द्वारा शंख निनाद के साथ शोभायात्रा का आरंभ हुआ। गोटैयाबाग तिराहा, ब्लॉक कार्यालय होते हुए यह उदयपुर महेवा तक पहुँची, जहाँ नारी उत्कर्ष दीप महायज्ञ का आयोजन किया गया।

महिला मंडल की सुगंधा शुक्ला ने नववर्ष के स्वागत में शंखनाद के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि शंखनाद से सूक्ष्म वातावरण में सात्विक शक्तियाँ बलवती होती हैं। युवा प्रकोष्ठ के संयोजक अनुराग मौर्य ने वसुधैव कुटुंबकम का संदेश देते हुए सभी से नववर्ष पर सामाजिक सौहार्द बढ़ाने और भेदभाव से ऊपर उठकर सबके मंगल की कामना करने की अपील की।

कनाडा और अमेरिका में दीपयज्ञ

400 युवाओं को मिली शान्तिकुञ्ज दर्शन की प्रेरणा

टोरंटो। कनाडा : गायत्री परिवार टोरंटो ने भव्य दीपयज्ञ के आयोजन के साथ नववर्ष 2025 का स्वागत किया। विशेषता यह रही कि 8 से 28 वर्ष तक के बच्चों और युवाओं ने मंच संचालन, पूजन, प्रज्ञा गीत गायन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय पर प्रेजेंटेशन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सभी कार्यक्रम सम्पन्न कराए। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के प्रेमभाव व युग चेतना विस्तार के प्रयास तथा नववर्ष के संकल्पों पर भी चर्चा की गई। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के निर्देशों के साथ आती-जाती श्वासों का ध्यान सबके लिए आह्लादकारी सिद्ध हुआ। उनका वीडियो संदेश भी दिखाया गया।

इस कार्यक्रम के संचालकों की एक टीम 2024 में शान्तिकुञ्ज आई थी। उन्होंने नववर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित दीपयज्ञ के माध्यम से 400 से अधिक परिजनों को शान्तिकुञ्ज दर्शन की प्रेरणा दी।

मिलपीटस, कैलिफोर्निया। यूएसए
प्रगतिशील विचारों के साथ नवयुग की संरचना के लिए समर्पित अमेरिका में रह रहे कुछ परिवारों ने गायत्री दीपयज्ञ के साथ नववर्ष का स्वागत किया। अतुल गुप्ता एवं पल्लवी पंडित के आवास पर यह दीपयज्ञ हुआ। लगभग 50 परिजनों ने भाग लिया। सबने सर्वत्र सुख, शान्ति और मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की। कैंसस सिटी से भी कुछ परिवार जूम एप के माध्यम से जुड़े। यज्ञ का संचालन कनेक्टीकट से मंजू शर्मा की टोली ने किया।

विवेकानन्द जयंती की पावन वेला में युग चेतना ने लाखों श्रद्धालुओं को झकझोरा

युग चेतना हमें परिवर्तन के लिए पुकार रही है

108 कुण्डीय यज्ञ, कोटा, राजस्थान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 11 जनवरी 2025 को विजयश्री रंगमंच, दशहरा मैदान, कोटा में चल रहे 108 कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। दीप महायज्ञ की मंगल वेला थी। यज्ञ स्थल पर लाखों दीप जले, दीपमालाएँ सजाई गईं। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस दीप ज्योति को हर श्रोता के मन-मस्तिष्क तक पहुँचाया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने परम पूज्य गुरुदेव के संदेश को दोहराते हुए कहा कि भगवान के घर व्यक्ति जाता नहीं, बुलाया जाता है। आज इस भगवान के घर में, जहाँ यह दीप महायज्ञ का पुनीत कार्य हो रहा है, आप आए नहीं हैं, बल्कि बुलाए गए हैं। श्रद्धालुओं के हृदयों को गहराई से छूते हुए उन्होंने यह भी कहा कि जिसका हाथ भगवान थाम लेते हैं, उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। पूज्य गुरुदेव ने जिनका हाथ थामा, वे रुक नहीं सकते, वे निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे।

शिक्षा नगरी कोटा में

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि अब यह क्षेत्र शिक्षा और अध्यात्म के समन्वय की ओर बढ़ रहा है। जिस चेतना के साथ हम लोग जुड़े हैं, वह हमें युग परिवर्तन के लिए पुकार रही है और इसी चेतना से प्रेरित होकर हमें समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए संकल्पनिष्ठ होना चाहिए।

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने यज्ञ स्थल में साहित्य विस्तार पटल, देव संस्कृति दिग्दर्शन प्रदर्शनी, स्वावलंबन स्टॉल आदि का अवलोकन किया। वे गायत्री शक्तिपीठ, विज्ञान नगर, कोटा के दर्शन करने भी गए।

108 कुण्डीय यज्ञ, कुम्भराज, म.प्र.

जीवन यज्ञ के संकल्प दिलाए

विवेकानन्द परम्परा के अंतर्गत भारतीय देव संस्कृति के अभ्युदय के लिए तत्पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विवेकानन्द जयंती के दिन कुम्भराज पहुँचे। उन्होंने वहाँ चल रहे 108 कुंडीय विराट गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज इस पुण्य स्थल पर आयोजित हो रहा यह यज्ञ एक युग परिवर्तनकारी चेतना का प्रतीक है।

पूर्णाहुति के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यज्ञ केवल आहुतियों का अंत नहीं, बल्कि नए संकल्पों के साथ जीवन को यज्ञमय बनाने और समाज सुधार के लिए नए अध्याय की शुरूआत है। युग निर्माण योजना में व्यक्तिगत मनोकामनाओं की पूर्ति की अपेक्षा सामाजिक उत्थान का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। पूज्य गुरुदेव के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए जब हम यज्ञ में आहुति देते हैं, तो हम अपने भीतर की नकारात्मकता को समाप्त कर समाज में सद्गुणों के विस्तार की भावनाएँ व्यक्त कर रहे होते हैं।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गायत्री शक्तिपीठ कुंभराज पहुँचे और माँ गायत्री का पूजन कर सर्वत्र मंगल की कामना की।

विवेकानन्द जयंती पर स्वामी जी को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

स्वयं दीप बनो और जग को जगमगाओ

251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

गोहद, भिण्ड। मध्यप्रदेश

गोहद में 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का विराट आयोजन सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विवेकानन्द जयंती के दिन महायज्ञ में आयोजित दीप महायज्ञ के शुभ अवसर पर पहुँचे और 'अप्प दीपो भव।' का संदेश दिया।

भिंड, ग्वालियर से आए हजारों परिजनों को पूज्य गुरुदेव के विचारों का स्मरण कराते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि जब हम सच्चे हृदय से पुकारेंगे तो गायत्री माता हमारी पुकार अवश्य सुनेगी। आप अपने जीवन की सारी परेशानियाँ यहाँ गुरुदेव को समर्पित करके जाएँ और जब लौटें तो दूसरों की समस्याओं का समाधान करें। उन्होंने यज्ञ के गूढ़ आध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य यदि अच्छा सोचे और अच्छा करे, तो उसे प्रगति करने से कोई रोक नहीं सकता।

आप अपने दीपक स्वयं बनो। आज का समय राष्ट्र के जागरण, स्वयं के जागरण और जन जागरण का है। यह युग परिवर्तन का वह क्षण है, जब हमें अपनी जिम्मेदारियों को पहचान कर समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभानी होंगी।

राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी के अवसर पर 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ गोहद (भिण्ड) के देवमंच पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को युवा हृदय सम्राट स्वामी विवेकानंद जी का चित्र भेंट करते युवा प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश के प्रांतीय समन्वयक विवेक चौधरी एवं जिला युवा प्रकोष्ठ भिण्ड के सत्यम सोनी।

कंकड़ को हीरा बनाने की विद्या है गायत्री और यज्ञ

108 कुण्डीय यज्ञ, उरई, उ.प्र.

उरई, जालौन। उत्तर प्रदेश

आध्यात्मिकता और वीरता की अनगिनत गाथाओं के साक्षी रहे जालौन जिले के उरई नगर में सम्पन्न 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ ने संपूर्ण जनमानस में एक नई चेतना का संचार किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 13 जनवरी को उरई के महायज्ञ में देवपूजन के अवसर पर पहुँचे। उन्होंने वर्तमान समय की विडम्बनाओं और यज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं के सौभाग्य की याद दिलाई।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि आज का व्यक्ति असंख्य समस्याओं से जूझ रहा है, मन में अपार असंतोष है, जिनके समाधान के लिए वह दर-दर भटकता फिर रहा है। भगवान ने तो मनुष्य को हीरा बनाकर भेजा है, लेकिन वह कंकड़ बना बैठा है। गायत्री और यज्ञ उस कंकड़ को हीरा बनाने की विद्या है। यदि पत्थर बनकर बैठना ही है, तो नींव का पत्थर बनें, पारस का पत्थर बनें, मील का पत्थर बने, नहीं तो गुरुदेव एवं माताजी के युग निर्माण योजना की नींव का पत्थर बनें।

देवपूजन के इस अलौकिक दिव्यता सम्पन्न कार्यक्रम में हजारों गायत्री परिजन एवं प्रबुद्धजन राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए संकल्पित हुए। इस अवसर पर जालौन के जिलाधिकारी श्री राजेश पांडेय जी को डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गोहद एवं उरई स्थित गायत्री शक्तिपीठों में पहुँचे, दर्शन किये, परिजनों से भेंट की। उन्होंने उरई शक्तिपीठ में नवनिर्मित साधना केंद्र का लोकार्पण किया।

स्वामी विवेकानन्द की जयंती

युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना और सांस्कृतिक चेतना जगाते विविध कार्यक्रम

हर तहसील में कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ

बड़वानी। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ बड़वानी ने स्वामी विवेकानंद जयंती के 162वें जन्म दिवस पर जिले के कई विद्यालयों में तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में प्रेरणाप्रद उद्बोधनों के माध्यम से स्वामी जी के जीवन आदर्शों को उकेरा गया। जिले की सभी तहसीलों में चित्रकला, रंगोली, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

सीरवी इंटरनेशनल स्कूल, बड़वानी में आयोजित कार्यक्रम में श्री संजय सावनेर ने स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो बाधाओं को चीर कर अपना मार्ग बनाता है, वह परिस्थितियों का दास नहीं, उसका नियंत्रण कर्त्ता, स्वामी बन जाता है। स्वामी विवेकानन्द जी ऐसे ही महान व्यक्तित्व के धनी थे। जिला समन्वयक श्री लखन विश्वकर्मा ने भी बच्चों को व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की प्रेरणाएँ दीं।

राजपुर तहसील में श्री देवी सिंह कनासे ने शासकीय माध्यमिक विद्यालय ठान में, **ठीकरी** तहसील में श्री राकेश मेवाड़ ने, श्री भेरूलाल जी हमड़ ने स्वामी विवेकानन्द स्कूल में, **सेंधवा** में प्रिंस वर्मा, चेतन गोयल एवं युवा मण्डल ने बालक छात्रावास में **वरला** युवा प्रकोष्ठ के श्री मनोज पाटिल ने विद्यालयों में स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती मनाते हुए हजारों विद्यार्थियों को आदर्शोन्मुख जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं।

सीरवी इंटरनेशनल स्कूल बड़वानी में विजेताओं का सम्मान, बुरहानपुर में आयोजित युवा चेतना शिविर एवं वाराणसी में निकाली गई प्रभातफेरी

छात्रावास में मनाई गई स्वामी जी की जयंती

युवा प्रकोष्ठ सेंधवा तहसील की इकाई द्वारा सेंधवा में बालक छात्रावास के बालकों के साथ युवा दिवस मनाया गया। श्रीमती पूजा पाटील ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वामी विवेकानंद जी के जीवन का अनुसरण करने की प्रेरणा दी। छात्रावास अधीक्षक श्री जिन्नू सिंघोरिया व कई अन्य वक्ताओं ने भी छात्रों को सत्प्रेरणाएँ दीं।

स्वामी जी के जीवन पर प्रश्नोत्तरी हुई। सही उत्तर देने वालों को पुरस्कार दिए गए।

युवा चेतना शिविर का आयोजन हुआ

बुरहानपुर, मध्य प्रदेश शाखा ने स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती पर युवा चेतना शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में 500 युवाओं ने भागीदारी की।

स्वच्छता अभियान चलाकर दी श्रद्धाञ्जलि

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ केवलारी ने राष्ट्रीय युवा दिवस पर युवा हृदय सम्राट स्वामी विवेकानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए वैनगंगा-सागर नदी ने घाट पर एवं घाट तक पहुँचने के मार्ग पर स्वच्छता अभियान चलाया। पत्थरों एवं बोरियों से कूड़ा एकत्रित करने हेतु प्राकृतिक डस्ट बिन बनाया गया। साथ ही पूरे घाट के बड़े पत्थरों में सदवाक्य लेखन, नदियों के प्रति हमारे कर्तव्य, उन्हें गंदा न करने की अपील लिखी गई।

राष्ट्रोत्थान में भागीदारी के संकल्प लिए

गायत्री परिवार मोडासा, जिला अरवल्ली, गुजरात से जुड़े युवाओं ने राष्ट्रीय युवा दिवस पर नगर के चौराहे पर स्थित स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये। सभी ने स्वामी जी के आदर्शों एवं सिद्धांतों पर चलते हुए राष्ट्र के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विकास में भरपूर योगदान देने का संकल्प लिया।

(.... शेष समाचार पृष्ठ 8 पर)

अपने भाग्य को मनुष्य खुद बनाता है, ईश्वर नहीं।

छत्तीसगढ़ में युग निर्माणी आस्था की दिव्य ज्योति जलाते महायज्ञ समारोह

ऋषियुग्म की प्रखर प्राण चेतना के संवाहक वरिष्ठ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की उपस्थिति ने बढ़ाई यज्ञोत्सवों की गरिमा

विवेकानन्द परम्परा के अंतर्गत परम पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्ति अभियान के वैश्विक विस्तार में ध्वजवाहक की भूमिका निभा रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 3 से 6 जनवरी 2025 की तिथियों में छत्तीसगढ़ और ओडिशा के प्रवास पर थे। इस प्रवास में उन्होंने दोनों राज्यों में आयोजित 24, 51 एवं 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञों के कई कार्यक्रमों में भाग ले रहे लाखों कार्यकर्त्ताओं एवं श्रद्धालुओं को संबोधित किया। इन कार्यक्रमों में उन्होंने माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा एवं कई अभिनव स्थापनाओं का लोकार्पण किया। अपने चार दिवसीय छत्तीसगढ़ प्रवास के समापन पर उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोगों से मिले प्यार और सम्मान को वे कभी नहीं भूल सकते।

भावविभोर परिजनों द्वारा रायपुर में एअरपोर्ट पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का भव्य स्वागत

विमान तल पर भव्य स्वागत

छत्तीसगढ़ प्रवास का शुभारंभ जनवरी 2025 को राजधानी रायपुर से हुआ। विवेकानंद एयरपोर्ट पर उनका स्वागत करने छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संगठन के वरिष्ठ प्रतिनिधि, नगर के कई गणमान्य, मिशन के युवा उत्तराधिकारी एवं श्रद्धालु परिजन उपस्थित थे। विमान तल पर भव्य स्वागत के पश्चात् उन्होंने अपने प्रथम कार्यक्रम के लिए प्रस्थान किया।

गायत्री विद्यापीठ का लोकार्पण

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 3 जनवरी को जांजगीर-चाम्पा जिले के अकलतरा तहसील के गाँव तरौद में गायत्री विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के नवीन भवन के लोकार्पण के लिए पहुँचे। विद्यालय के लोकार्पण के पश्चात् उन्होंने एक सभा को संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि बच्चों को ऐसी शिक्षा देने की आवश्यकता है, जो उनका व्यक्तित्व निर्माण करने में समर्थ हो। विद्यालय व्यक्तित्व की आधारशिला होते हैं। उन पर केवल पाठ्यपुस्तक पढ़ाने की ही नहीं, बच्चों का व्यक्तित्व गढ़ने की जिम्मेदारी भी होती है। यह तभी संभव है, जब मानव जीवन की गरिमा और उसके उद्देश्य का सही बोध हो। उन्होंने बालक, पालक और शिक्षकों को परम पूज्य गुरुदेव के विचार और गायत्री परिवार के युग निर्माण आन्दोलन से जुड़कर अभिनव समाज के नवनिर्माण में भागीदार बनने का आह्वान किया।

आदरणीय डॉ. साहब ने मंच पर उपस्थित गणमान्यों को देवस्थापना स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

तरौद में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत और विद्यालय का लोकार्पण करते आद. चिन्मय पण्ड्या जी

108 कुण्डीय यज्ञ

जो दिये की तरह जलकर औरों को राह दिखाये, वही जीवन सार्थक है।

कुसमुण्डा, कोरबा : कुसमुण्डा में 1 से 04 जनवरी 2025 की तिथियों में आयोजित राष्ट्र जागरण 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। इसमें युग निर्माण आन्दोलन के अग्रदूत आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। वे पूर्व संध्या पर आयोजित अद्भुत, मनमोहक सहस्र वेदीय दीप महायज्ञ में उपस्थित हुए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्बोधन में स्थानीय गायत्री परिवार के परिजनों की साधना, सेवा और संस्कार की भावना की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने कहा कि जीवन उनका ही सार्थक है, जो दिये की तरह जलकर औरों को राह दिखा सकें। वर्तमान समय में गिरते मानवीय मूल्य, टूटते परिवार और बिखरते समाज की दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए उन्होंने समाज के पुरोधाओं से परिस्थितियों को बदलने में अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी कुसमुण्डा में आयोजित दीपयज्ञ में उद्बोधन देते हुए

शान्तिकुञ्ज से आई श्री परमेश्वर साहू की टोली ने चार दिवसीय महायज्ञ सम्पन्न कराया। 151 दीक्षा, 30 पुंसवन, 35 नामकरण, 50 अन्नप्राशन, 23 मुण्डन, 29 जन्मदिवस एवं 18 विवाह दिवस संस्कार हुए। यज्ञ की सफलता में सम्पूर्ण कोरबा जिले के गायत्री परिजनों का प्रशंसनीय योगदान रहा।

मंत्री जी की शुभकामनाएँ

माननीय श्री लखन लाल देवांगन जी, श्रम वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री छ.ग. शासन, कटघोरा से विधायक श्री प्रेमचंद पटेल जी एवं नगर पालिक निगम कोरबा के नेता प्रति पक्ष श्री हितानंद अग्रवाल जी की विशेष उपस्थिति रही। माननीय मंत्री जी ने सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

समापन की पूर्व संध्या पर ऊर्जा क्लब में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग की गोष्ठी में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का विशेष उद्बोधन हुआ। उन्होंने जीवन की सफलता और सार्थकता में गायत्री एवं यज्ञ का महत्त्व समझाया तथा जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलाने की कला बताई।

इस संगोष्ठी में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, छत्तीसगढ़ के महाप्रबंधक श्री बिजॉय कुमार जी सहित अनेक गणमान्यों की उपस्थिति रही। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें स्मृति चिह्न एवं युग साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया। जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुखदेव निर्मलकर एवं छत्तीसगढ़ जोन प्रभारी श्रीमती आदर्श वर्मा भी उपस्थित रहे।

108 कुण्डीय यज्ञ

जीवन देवता को जगाये बिना सच्चा सुख संभव नहीं

कोतबा, जशपुर। छत्तीसगढ़

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 4 जनवरी को वनवासी क्षेत्र कोतबा में चल रहे 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री विष्णुदेव साय की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी की उपस्थिति ने समारोह की गरिमा कई गुना बढ़ा दी। डॉ. चिन्मय जी ने शान्तिकुञ्ज की ओर से दोनों का भावभरा स्वागत किया।

श्रीमती कौशल्या देवी को साहित्य भेंट करते और कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करते डॉ. चिन्मय जी व यज्ञ करते श्रद्धालु

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने वहाँ सम्पन्न हो रहे गायत्री महायज्ञ एवं युग निर्माण आन्दोलन की समस्त गतिविधियों को युग परिवर्तन की अभूतपूर्व क्रान्ति का विशिष्ट अध्याय बताया। उन्होंने कहा कि साधन, सुविधाएँ चाहे कितनी भी क्यों न बढ़ा ली जायें, जब तक मनुष्य के भीतर का देवत्व नहीं जागता, सुविधाएँ मनुष्य को सच्चा सुख नहीं दे सकतीं। उन्होंने कहा कि समाज को बदलने के लिए हमें संगठित होकर प्रयास करने होंगे। गायत्री और यज्ञ समाज के पतनोन्मुख प्रवाह को रोककर उत्कर्ष की दिशा में ले जाने का अनिवार्य साधन है।

51 कुण्डीय यज्ञ

हमें यज्ञभाव को जन-जन के मनों तक पहुँचाना है

बरमकेला, सारंगढ़ बिलाईगढ़। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार ट्रस्ट बरमकेला द्वारा 1 से 5 जनवरी तक की तिथियों में 51 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया था। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के उद्बोधन ने समस्त याजकों को अपार ऊर्जा प्रदान की।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अपने अत्यंत ओजस्वी व प्रेरणादायी उद्बोधन में यज्ञ के माध्यम से वातावरण पर होने वाले सकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यज्ञ सच्चे अर्थों में सत्कर्म है, यज्ञ से आसपास का वातावरण पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक होता है। ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए। जनसेवा ही यज्ञ है। इस यज्ञभाव को हमें जन-जन के मनों तक पहुँचाना है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बरमकेला शक्तिपीठ में पहुँचकर माँ गायत्री के दर्शन किये और उपस्थित सभी परिजनों से आत्मीयतापूर्ण संवाद कर उनमें सक्रियता के संकल्प जगाए।

बरमकेला का यज्ञ नारी सशक्तिकरण प्रधान था। इसे शान्तिकुञ्ज से श्रीमती श्यामा राठौड़ के नेतृत्व में पहुँची ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने सम्पन्न कराया।

बरमकेला में यज्ञ संचालन करती शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली

समाज को जरूरत है जीते जागते प्राणवान दीपकों की

108 कुण्डीय यज्ञ

बिजेपुर, बरगढ़। ओड़िशा

4 जनवरी को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी बिजेपुर नगर में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। उन्होंने दीप महायज्ञ के अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को अखण्ड दीप की शताब्दी के विशेष परिप्रेक्ष्य में संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि यज्ञ केवल एक प्राचीन परंपरा नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति की आत्मा है। यह समाज में ऊर्जा, शुद्धता और संतुलन का वाहक है। आज राष्ट्र को ऐसे जीते जागते जगमगाते दीपकों की आवश्यकता है, जो स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन का अंधियारा दूर करने के लिए आगे आएँ।

डॉ. चिन्मय जी ने यज्ञ की स्मारिका का विमोचन किया। तत्पश्चात गणमान्यों को सम्मानित करते हुए उन्हें समाजोत्थान के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे युगयज्ञ में सहभागिता की प्रेरणा दी।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने यज्ञ स्थल पर स्थित जगन्नाथ भगवान की प्रतिमूर्ति की आरती की एवं 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' और शहीद स्मारक पर पुष्प चढ़ाकर नमन वंदन किया।

बिजेपुर के 51 कुण्डीय यज्ञ में आयोजित दीपयज्ञ के अवसर पर दिव्य भावों से आलोकित हो उठा यज्ञ परिसर

जो शिक्षा मनुष्य को परावलंबी, अहंकारी और धूर्त बनाती हो, वह शिक्षा, अशिक्षा से भी अधिक बुरी है।

प्राणवान प्रयाज से मिली शानदार सफलता

यज्ञ में सपत्नीक पधारे माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी माननीय मुख्यमंत्री जी को गायत्री माता का चित्र भेंट करते हुए

108 कुण्डीय यज्ञ

गरियाबंद। छत्तीसगढ़

दिनांक 3 जनवरी से 6 जनवरी 2025 तक गरियाबंद में राष्ट्र जागरण 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ। इस कार्यक्रम में 5 जनवरी को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय श्री विष्णु देव साय की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय की विशेष उपस्थिति में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लगभग 30,000 श्रद्धालुओं की विशाल जनसभा को संबोधित किया। लगभग 5000 युवा इस अवसर पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुखदेव निर्मलकर व्यवस्था में साथ रहे।

कार्यक्रम की भव्य कलश यात्रा का शुभारंभ 24 बहिनों ने शंख ध्वनि करके किया। 3000 कलश धारण किये माता-बहिनों के साथ निकली कलश यात्रा नारी अभ्युदय का संदेश देती रही। यादव शौर्य नृत्य, आदिवासी नृत्य, पंथी नृत्य सहित पर्यावरण संरक्षण की झांकियाँ छत्तीसगढ़ी संस्कृति की मनमोहक छटा बिखेरती रही।

शंखनाद के साथ शोभायात्रा का शुभारंभ करती बहिनें

400 गाँवों का मंथन

गाँव-गाँव साधना : महायज्ञ के प्रयाज में जिले के 400 से अधिक गाँवों में शक्ति कलश का भ्रमण हुआ। इन गाँवों में 36 टोलियों द्वारा 3500 मंत्र लेखन की पुस्तिका तथा 2500 गायत्री चालीसा की पुस्तिकाएँ वितरित की गईं।

शक्ति कलश के सान्निध्य में : गायत्री शक्तिपीठ गरियाबंद में 35 देव कन्याओं के द्वारा निरंतर साधना का क्रम चलता रहा।

500 युवाओं को जोड़ा : जिले के हर विकासखंड में एक, तीन एवं पाँच दिवसीय युवा व्यक्तित्व निर्माण शिविर एवं नारी सशक्तीकरण शिविर लगाकर 500 से अधिक युवाओं को मिशन से जोड़ा गया।

मीडिया का सदुपयोग : जिले के युवा प्रकोष्ठ के तकनीकी सहयोग से कार्यक्रम का यूट्यूब में तत्काल प्रसारण किया गया।

अंतर्निहित देवत्व को उभारें, यज्ञभाव को जीवन में उतारें

108 कुण्डीय यज्ञ

नवापारा, राजिम। छत्तीसगढ़

हरिहर विद्यालय, नवापारा में 5 जनवरी से 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आरंभ हुआ। देवपूजन के दिन इस यज्ञ में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का आगमन हुआ। उन्होंने गायत्री और यज्ञ को जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला सबसे महान साधन बताया। उन्होंने कहा कि मनुष्य भटका हुआ देवता है। जीवन का सही उद्देश्य भीतर स्थित देवत्व जगाना है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इस यज्ञभाव को अंग बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हुए पीड़ित मानवता की सेवा करें और चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए एक आदर्श नागरिक के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करें।

ध्वजारोहण एवं कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करते डॉ. चिन्मय जी

नवापारा पहुँचने पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री माता और वहाँ स्थित 24 गायों की अनूठी गौशाला के दर्शन किये।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों को पूज्य गुरुदेव का साहित्य और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

सवा लाख दीपकों से जगमगा उठा यज्ञस्थल

सवा लाख दीपों से ओम, स्वस्तिक जैसी शुभ आकृतियों में सजी दीपमालाएँ महायज्ञ का विशेष आकर्षण रहीं। पूरा यज्ञ पाण्डाल अनूठी दिव्यता से जगमगा उठा। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री परमेश्वर साहू की टोली ने श्रोताओं से जीते-जागते दीपक बनकर समाज में व्याप्त बुराईयों को नष्ट करने और युवाओं को राष्ट्र निर्माण के महान कार्य में बढ़चढ़कर योगदान देने का आह्वान किया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री श्री तोखन साहू और विधायक श्री इन्द्रकुमार साहू विशेष रूप से उपस्थित हुए।

इस महायज्ञ में एक जोड़े का आदर्श विवाह सहित बड़ी संख्या में विविध संस्कार हुए।

नशामुक्त भारत निर्माण का संदेश

अपने पूरे प्रवास में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने नशामुक्त समाज के निर्माण पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि युवा हमारे समाज, राष्ट्र का भविष्य हैं। उनमें नशे की प्रवृत्ति का बढ़ना चिंताजनक है। नशा स्वास्थ्य, शान्ति, धन, विवेक सब कुछ नष्ट कर देता है। नशामुक्त भारत का निर्माण हमारे युग निर्माण आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

छत्तीसगढ़ के दो प्रज्ञापीठों में हुई प्राण प्रतिष्ठा

हमारा विश्वास हमें नई ऊँचाइयों तक ले जाता है। - *डॉ. चिन्मय जी*

मुढेना, महासमुंद। छत्तीसगढ़

दो बार 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कराने वाले महासमुंद जिले पर परम पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा रही है। दिनांक 5 जनवरी को उसी महासमुंद जिले के ग्राम मुढेना में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री प्रज्ञापीठ में माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की। उनकी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष रूप से प्रेरणादायी बना दिया।

मुढेना का प्राण प्रतिष्ठा समारोह 24 कुंडीय महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ. चिन्मय जी ने भक्त और भगवान के संबंधों की मार्मिक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि भक्त की पुकार ऐसी हो कि भगवान को आना ही पड़े। जीवन में आगे बढ़ने की चुनौती और जिम्मेदारी हमारी अपनी होती है, ईश्वर हमारे प्रत्येक प्रयास में हमारा साथ देते हैं। वे हमारे साहस और आत्मविश्वास को बनाए रखते हुए हमें अपनी क्षमता का आभास कराते हैं। लेकिन यह तब होता है जब हम पूर्ण आस्था और समर्पण के साथ कार्य करते हैं, तब हमारे भीतर का विश्वास हमें नई ऊँचाइयों तक ले जाता है।

महायज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं ने भावभरी आहुतियाँ अर्पित करते हुए सामूहिक चेतना जागरण के इस महोत्सव में भाग लिया।

मुढेना में प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा एवं लोकार्पण

कठिया, रायपुर। छत्तीसगढ़

5 जनवरी को ही रायपुर जिले के ग्राम-कठिया-2 स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ में माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा हुई। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के इस दिव्य आयोजन ने सभी उपस्थित साधकों और श्रद्धालुओं के हृदय में दिव्य प्रेरणा का संचार किया।

मध्य प्रदेश में नई क्रान्ति के उत्साह का अभिनंदन

आरंभ हो रहा है प्रज्ञा अभियान का मध्य प्रदेश संस्करण

अपने मिशन में हर वर्ष बसंत पर्व से क्रान्ति का एक नया अध्याय आरंभ होता रहा है। इस वर्ष अखण्ड दीप की स्थापना और परम वंदनीया माताजी के शताब्दी वर्ष-2026 के उपलक्ष्य में पूरे देश में ज्योति कलश यात्राएँ आरंभ हुईं। इसके साथ ही आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मिशन के निरंतर विराट होते स्वरूप को देखते हुए प्रज्ञा अभियान के क्षेत्रीय संस्करण आरंभ करने के निर्देश दिये। 29 से 31 दिसम्बर की तिथियों में शान्तिकुञ्ज में आयोजित ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला में मध्य प्रदेश के लगभग 1500 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में उन्होंने प्रज्ञा अभियान के मध्य प्रदेश संस्करण का लोकार्पण भी किया।

मध्य प्रदेश के प्रांतीय संगठन ने वसंत पर्व की मंगल वेला में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और श्रद्धेया शैल जीजी के आशीर्वाद के साथ शान्तिकुञ्ज से उभरी इस प्रेरणा को एक प्राणवान आन्दोलन का रूप देने का निर्णय लिया है। दिनांक 15 जनवरी को मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुलमी जी की अध्यक्षता में प्रांतीय संगठन की वर्चुअल गोष्ठी हुई। इसमें श्री कुलमी जी ने कहा कि मध्य प्रदेश विविध क्रान्तियों में सदैव अग्रणी रहा है। प्रज्ञा अभियान के क्षेत्रीय संस्करणों के शुभारंभ का अवसर भी मध्य प्रदेश को मिल रहा है, यह सौभाग्य की बात है।

गोष्ठी में जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल सहित समस्त उपजोन समन्वयकों और विशेषज्ञ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। उज्जैन के श्री देवेन्द्र श्रीवास्तव जी को प्रज्ञा अभियान के मध्य प्रदेश संस्करण का समन्वयक और भोपाल के श्री रमेश नागर एवं बड़वानी के श्री महेन्द्र भावसार को उनका सहायक नियुक्त किया गया। इस योजना को लेकर पूरा जोन बहुत उत्साहित है। संगोठी में हर जिले में न्यूनतम 1000 घरों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने, तद्नुसार 30 से 55 हजार पाक्षिक के सदस्य बनाने का संकल्प उभरा है।

मध्य जोन संस्करण की घोषणा के बाद से ही सभी जिलों में बहुत उत्साह देखा जा रहा है। सभी जिलों में सदस्यता अभियान तेजी से गतिशील हो रहा है।

उज्जैन, बालाघाट और सिवनी जिलों ने प्रथम 10 दिनों में ही 1000 सदस्य बनाने का लक्ष्य पूरा कर लिया है, जबकि देवास, धार, इंदौर और नरसिंहपुर जिलों के सदस्यों की संख्या 500 से अधिक हो गई है।

30 से 55 हजार घरों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प उभरा है

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस उत्साह के समाचारों से गद्गद हैं। श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने शुभ संकल्पों को सिद्धि तक पहुँचने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह योजना पूरे प्रदेश में देव परिवारों के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना ... (पृष्ठ 6 से आगे)

नशा एवं प्रदूषणमुक्त समाज बनाएँ

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ कुड़वार नाका में स्वामी जी के 162वें जन्मदिन पर युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसे मेडिकल कॉलेज के पैथोलॉजी विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुवर्णा, गायत्री परिवार के प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री प्रभाकर सक्सेना एवं जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह ने संबोधित किया। कार्यक्रम में भाग ले रहे युवाओं में स्वामी जी के सपनों के भारत के निर्माण के लिए नशा एवं प्रदूषणमुक्त समाज के निर्माण के लिए योगदान देने के संकल्प उभारे गए।

युवा जागरण प्रभात फेरी निकाली

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नगवां लंका से जुड़े पांडेयपुर युवा मंडल द्वारा स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती के उपलक्ष्य में युवा जागरण रैली निकाली गई। एक किलोमीटर की परिधि में यह प्रभात फेरी निकाली गई। दर्शकों को मिशन की पत्रिकाएँ एवं व्यसनमुक्ति पुस्तिकाएँ प्रदान की गईं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.01.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26